# गुरु गोरखनाथ जी
## राजकीय महाविद्यालय हिसार

# हिंदी
# विभागीय पत्रिका

**हिंदी शब्दों की रचना नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों का संचार है।**

**राजपाल**

**सत्र : 2025-26**

**अप्रैल, 2026**

# हिंदी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

**हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी**

**वर्ष : 01 अंक 16 अप्रैल 2026**
**चैत्र | विक्रम संवत-2082**

**संस्थापक सम्पादक**

डॉ राजपाल

**सहायक सम्पादक**

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
डॉ. वीरेंद्र
डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

**छात्र सम्पादक**

किरण रानोलिया
रिनू
राहुल, प्रियंका
संतोष

**सम्पादकीय कार्यालय**

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

## एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

पुण्यतिथि विशेष
विविध
घासीराम कोतवाल नाटक
डॉ. भीमराव अंबेडकर

साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
विलोम शब्द
ग़ज़ल
पुस्तक समीक्षा

**हिन्दी साहित्य विषय के प्रतियोगियों के लिए भी उपयोगी**

# संदेश

प्रिय विद्यार्थियों, प्राध्यापकों एवं हिंदी विभाग परिवार के सभी सदस्यगण, प्रथम तो मैं इस 'हिंदी विभागीय पत्रिका' के अप्रैल अंक के माध्यम से आप सभी को चैत्र नवरात्रि एवं हिंदू नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। अप्रैल का महीना केवल कैलेंडर पर एक तारीख नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के नवोन्मेष, नव सृजन और उमंग का प्रतीक है। चारों ओर वसंत का अंतिम चरण पल्लवित होता दिखता है, जो हमें सिखाता है कि जीवन में निरंतर नवीनीकरण आवश्यक है।

जब मैं हिंदी विभाग की इस पत्रिका का संदेश लिख रहा हूँ, तो मेरे मन में गर्व की अनुभूति हो रही है। हिंदी केवल हमारी राजभाषा नहीं है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक चेतना की वह धारा है, जिसने सदियों से इस देश को जोड़े रखा है। इस विभाग में आप जो साहित्य, व्याकरण और पत्रकारिता सीख रहे हैं, वह आपको केवल डिग्री प्रदान नहीं करता, बल्कि संवेदनशील, तर्कशील और राष्ट्र निर्माता नागरिक बनाता है।

इस अप्रैल अंक की विशेषता यह है कि यह हमारे विभागीय छात्रों की लेखनी का अद्भुत संगम है। कविता हो, कहानी हो या आलोचनात्मक निबंध—सभी में एक नई ऊर्जा का संचार होना चाहिए। मैं सभी युवा साहित्यकारों से आग्रह करता हूँ कि वे केवल परीक्षोपयोगी हिंदी न लिखें, बल्कि चिंतनपरक और समसामयिक मुद्दों पर मुक्त होकर लिखें। आपकी लेखनी समाज में आई विसंगतियों का दर्पण होनी चाहिए।

मैं विभागाध्यक्ष और संपादक मंडल को साधुवाद देता हूँ कि उन्होंने इस अंक को अनुशासन और कलात्मकता के साथ संपादित किया है। साथ ही, आप सभी पाठकों से निवेदन है कि इस पत्रिका को केवल पठन-सामग्री न समझें, बल्कि इसे अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाएं।

अंत में, परीक्षा की तैयारियों के बीच भी साहित्य से जुड़ाव बनाए रखें। एक अच्छा पाठक ही एक अच्छा लेखक बनता है। आप सभी को इस नव वर्ष के आरंभ में उज्ज्वल भविष्य, सृजनशीलता और असीम सफलता की शुभकामनाएं।

**प्राचार्य**
**डॉ विवेक कुमार सैनी**

# संपादकीय

## साहित्य का समेकित प्रयास : संवाद और समर्पण

हिंदी विभाग की त्रैमासिक पत्रिका 'अक्षर पर्व' के अप्रैल अंक में आपका हार्दिक स्वागत है। बसंत ॠतु की तरह साहित्य भी हरियाली, नवीनता और उमंग का प्रतीक है। यह अंक न सिर्फ शैक्षणिक उपलब्धियों का दस्तावेज है, बल्कि नए विचारों के मिलन का सेतु भी है।

इस अंक की थीम है—'संवाद और समर्पण'। संवाद वह प्राण है जो परंपरा और आधुनिकता को जोड़ता है, और समर्पण वह शक्ति जो भाषा के हर कण को संजीवनी देता है। हमारे विभाग के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने जो रचनाएँ प्रस्तुत की हैं, वे मात्र कल्पना नहीं हैं, बल्कि अपने आसपास घटती सामाजिक वास्तविकताओं का प्रतिबिंब हैं।

इस अंक में छायावाद से लेकर समकालीन दलित और स्त्री चेतना के लेखों को प्राथमिकता दी गई है। कविताएँ हैं, जो मन को झकझोरती हैं; आलोचनात्मक निबंध हैं जो सोचने को विवश करते हैं; और प्रयोगात्मक कहानियाँ जो स्थापित मान्यताओं को ध्वस्त करती हैं। विशेष अतिथि स्तंभ में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. कुमार अरविंद का साक्षात्कार प्रकाशित किया गया है, जिन्होंने डिजिटल युग में हिंदी की प्रासंगिकता पर गहरी चिंता व्यक्त की है।

हमने इस अंक में विभागीय अनुसंधान परियोजनाओं ,सेमिनार पर' तथा 'हिंदी साहित्यिक गतिविधियाँ बुके से बेहतर बुक जैसे' विषय पर केंद्रित लेख शामिल किए हैं। यह हमारा प्रयास है कि भाषा को जीवंत रखा जाए, न कि मात्र पाठ्यपुस्तकों का विषय।

आज जब वैश्वीकरण के दबाव में क्षेत्रीय भाषाएँ संकट में हैं, हिंदी विभाग होने के नाते हमारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। यह पत्रिका एक मंच है—जहाँ सिद्धांत और व्यवहार एक होते हैं, जहाँ सपने देखने की छूट और आलोचना सुनने का साहस दोनों हैं। हम चाहते हैं कि यह मंच पाठकों और रचनाकारों के बीच की दूरी मिटाए।

अंत में, उन सभी को धन्यवाद जिन्होंने श्रम, समय और लेखन से इस अंक को समृद्ध किया। आपकी प्रतिक्रिया और चिंतन ही इस पत्रिका की सार्थकता सिद्ध करेगा। आइए, हिंदी को केवल भाषा न मानते हुए उसे अपनी चेतना का विस्तार बनाएँ।

**संपादक**

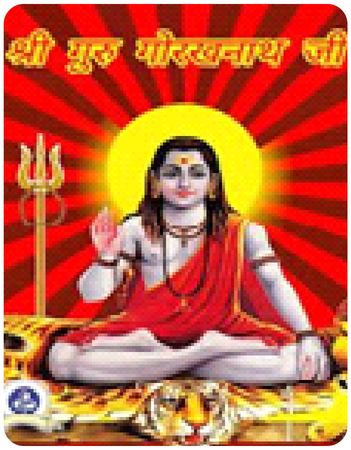


# गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

**गतांक से आगे....**

ब्रह्म के विषय में उनका विचार है कि जिस प्रकार स्फटिक बाहर-भीतर एक-सा रहता है उसी प्रकार ब्रह्म की चित्त शक्ति जीव के बाहर-भीतर भरी हुई है तथा ज्ञाता और ज्ञान से जिसे प्रस्तुत न किया जा सके और जो ज्ञान तथा उपमा के परे है वह ब्रह्म है ।" सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड सर्वेश्वर का स्थूल शरीर है, सृष्टि रचना उसकी जागृतावस्था है।" विराट, हिरण्यगर्भ और माया उसके तीन शरीर हैं तथा उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय उसकी तीन अवस्थायें हैं। ब्रह्म संसार का सर्वस्व है, उसको प्राप्त करना जीवात्मा का प्रमुख कर्तव्य है ।

उसकी प्राप्ति ज्ञान और भक्ति से सम्भव है। नवधा भक्ति का ग्रहण आवश्यक है। सृष्टि में ब्रह्म व्यापक है," किन्तु जीवात्मा और परमात्मा के मध्य माया व्यवधान प्रस्तुत करती हैं। माया की उपाधि से युक्त ब्रह्म परमात्मा है और उसत्री अविद्या से युक्त होने के कारण वह जीवात्मा है। यह माया ही जीवात्मा और परमात्मा में तादात्म्य नहीं होने देती है। इसके लिए ज्ञान अथवा भक्ति मार्ग का ग्रहण करना आवश्यक है, यही वह साधन है जिससे माया के व्यवधान को विनिष्ट किया जा सकता है।" माया के विनाश पर जीवात्मा को परमात्मा से अद्वैत होने का सुयोग उपस्थित होता है।" उसका अद्वैत हो जाना ही सच्चिदानन्द की प्राप्ति है, वही जीवात्मा का महासुख और महानन्द है। ब्रह्म का सत्पद निर्गुण और चित्पद सगुण है। सगुण-निर्गुण दोनों के मिश्रण से आनन्द सम्भावित है । इस सच्चिदानन्द को पहचानना और प्राप्त करना जीव का महान कत्त्तव्य है।"
इनकी दूसरी रचना "श्री परमामृत" है जिसमें इन्होंने गुरुवन्दना करते हुए गुरु को शिव शक्ति का साकार रूप तथा कर्म और प्रभाव के कारण उसे ब्रह्मा, विष्णु और महेश बतलाया है। योगाभ्यास के समस्त क्रिया कलापों का भी इसमें वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ में अद्वैत, राजयोग श्रादि का विस्तार से वर्णन किया गया है, जिससे इन पर नाथ सम्प्रदाय का प्रभाव स्पष्ट ही दिखाई देता है।"

५-७ जालंधरनाथ - इन्हें जालंधरपा अथवा जालंधीपाव भी कहते हैं ।

तनजूर में जालंधरनाथ के लिखे हुए सात ग्रन्थों का उल्लेख है। "विमुक्त मंजरी गीत' तथा "हूँकारचितविन्दु भावना क्रम" मगही भाषा में लिखे हुए हैं। "शुद्धिवज्ज्र प्रदीप" नामक टिप्पणी रूप में लिखित इनका एक ग्रन्थ है। राहुल जी ने नेपाल के बौद्धों में प्रचलित "चर्यागीति" नामक पुस्तक से भी जालन्धरनाथ के अपभ्रंश पद का संग्रह किया है जो सरहपाद के मत का समर्थन करता है। डॉ० कल्याणी मल्लिक ने "सिद्ध सिद्धान्त पद्धत्ति एण्ड अदर वर्क्स आफ नाथ योगीज" में बनारस से प्राप्त जालंधर जी की बारह सवदियों का संकलन प्रस्तुत किया है। इन सबदियों में गुरु महिमा, कर्म, अजपाजाप आदि की महिमा का गुणगान किया गया है ।
जालंधरनाथ की जलंधीपाव नाम से उपलब्ध सबदी उपदेशात्मक है, जिसमें सर्वत्र माया व्याप्त है," संयम युक्त जीवन व्यतीत करने से मन की साधना की जा सकती है, अजपाजाप, १०० आदि का वर्णन भी किया गया है। इस संसार को इन्होंने कुबक का खेत बताया है :-

यहु संसार कुवक का खेत, जब लग जीवै तव लग चेत । आष्यां देषे कानां सुणें, जैसा बौवे तैसा लुणै।

अत: वे कहते हैं कि-
पहले कीया सो अब भुगतावै, जो अब करै सौ आगें पावै । जैसा दीजें तैता लीजे, ताठें तन घर नींका कीजै।
इनकी सबदियों में कर्मों के अनुसार फल की प्राप्ति बताई गई है।

दत्त जी (दत्तात्रेय)
दत्तजी की सबदियों में उपदेश का स्वर प्रधान है। इनका कथन है कि दिखावे से योग साधना नहीं होती, '* संसार त्यागने से मोक्ष मिलता है,* संयम, संतोष, भ्रात्मज्ञान से परमात्मा की प्राप्ति संभव है, १* ईश्वर की प्राप्ति के लिए मनुष्य को द्वदातीत होना चाहिए : -
करम भरम हम ध्याइ करते, नह क्रम सत गुर लषाया ।
करम भरम का संसा त्यागा, सबद अगोचर पाया ।"
आसा नाम महा दुषं, निरास प्रम सुषं ।
आसा निरासा दोऊं त्यागी, तब सुष सोवै तपि गुला ।
अहंकार को इन्होंने महाव्याधि २०७ का नाम दिया है। इनके विचारों में अल्प, आहार, उच्च विचार, शरीर रक्षा निमित्त अल्पभिक्षा और इन्द्रियों को जीतने वाला ही सच्चा योगी होता है" जो स्वतंत्र विचरण करता है । गुरु धारण करना इन्होंने आवश्यक माना है क्योंकि "गुरू कीया लाभे अवधू***
इनकी कुछ सबदियाँ साधनात्मक भी हैं ।
मोड़की पाब- मीड़की पाव ने अपनी रचनाओं में परिशुद्ध कंचन के समान कामा घौर शुद्ध भावों तथा विचारों वाले कस्तूरी के समान विशिष्ट मन को गुरु के चरणों में समर्पित करने का उपदेश दिया है, जिससे अखंड मंडल उस साधक की मढ़ी के रूप में परिवर्तित हो जाएगा तथा काया जरामरण से क्षीण नहीं होगी । व्यर्थ के वाद-विवाद को त्याग कर अनहद प्राप्त करने के लिए भी इन्होंने उपदेश दिया है ।

# गुरु गोरखनाथ के पद

**ऐसा जाप जपौ मन लाई, सोहं सोहं अजपा गाई ॥ टेक ॥ आसण दिढ करि धरौ धियानं, अहनिसि सुमरौ ब्रह्मगियानं। जाग्रत न्यंन्द्रा सुलप अहारं, काम क्रोध अहंकार निवारं ॥ नासा अग्र निज, ज्यौ बाई, इडा प्यंगुला मधि समाई। छसैं सहस इकीसौ जाप, अनहद उपजै आपहि आप ॥ बंकनालि में ऊगै सूर, रोम रोम धुनि बाजै तूर। उलटै कमल सहस्त्रदल बास, भ्रमर गुफा महिं जोति प्रकास ॥ सुणि मथुरा सिव गोरख कहै, परम तत ते साधु लहै ॥**

हे अवधू ! मन लगाकर ब्रह्मा का सोहं सोहं जाप गाकर जपो। दृढ आसन लगाकर ध्यान धरो और दिन-रात ब्रह्म-ज्ञान का स्मरण करो। नींद से जागो, स्वल्प आहार लो और काम, क्रोध व अहंकार को दूर करो। नाक के अग्रभाग में जो वायु है, वह इड़ा और पिंगला में समा जाए अर्थात् श्वास-प्रश्वास भी रुक जाए। मनुष्य दिन भर में इक्कीस हजार छह सौ साँस लेता है, इनमें अपने आप अनहद शब्द पैदा हो जाए। बंकनाल (एक नाड़ी जो ललाट के पश्चिमी भाग से चलकर तालु मूल में खुलती है) में प्रकाश उग आए और शरीर के रोम-रोम में अनहद ध्वनि हो। सहस्रकमल उल्टे कमल के रूप में है। तब इससे सुगन्धि आने लगती है। इस कमल तक पहुँचने के लिए भ्रमर गुफा है जिसमें ब्रह्म की ज्योति का प्रकाश हो जाता है। गोरख कहता है- हे मथुरा सुन ! इस परम तत्त्व को साधु ही प्राप्त कर पाता है।सूर्य की बारह कलाएँ - चिन्ता, तरंग, दम्भ, माया, परग्रहण, प्रपंच, हेत, बुद्धि, काम, क्रोध, लोभ, मोह।
चंद्र की सोलह कलाएँ - शान्ति, निवृत्ति, क्षमा, निर्मलता, निश्चलता, ज्ञान, स्वरूप, पद, निर्वाण, निर्विष, निरंजन, आहार, निद्रा, मैथुन, वायु, अमृत।

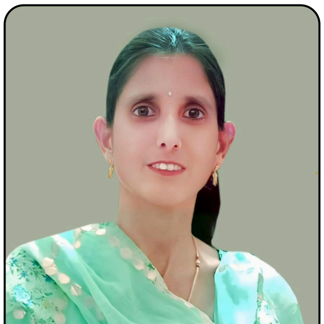

ीवन की पुस्तक का वह अध्याय जो आपके साथ लिखा गया था, कभी समाप्त नहीं
ा वह हर याद में फिर से पढ़ा जाता है। हर स्मृति में आप मुस्कुराती हो, हर सपने में
प बसी हो। आपके बिना यह पहला साल अधूरा रहा, पर आपका प्यार हमेशा हमारे
थ है। आपकी आत्मीयता के लिए प्रार्थना ।ओम शांति।"🙏

**Late- Smt. Bimla Devi**
20-08-1981 To 22-04-2025

# स्मृतियों के झरोखे से

## प्रथम पुण्यतिथि विशेष

जीवन के सफर में कुछ साथ ऐसे होते हैं जो कभी खत्म नहीं होते, भले ही शारीरिक उपस्थिति ओझल हो जाए। आज जब आपकी प्रथम पुण्यतिथि है, तो समय का यह एक वर्ष किसी सदी से कम नहीं लगा। घर का हर कोना, हर वस्तु और हर बीतता लम्हा आपकी उपस्थिति का अहसास कराता है।

अटूट जुड़ाव और निस्वार्थ प्रेम एक पत्नी केवल जीवनसंगिनी ही नहीं, बल्कि घर की धुरी और संबल होती है। आपका जाना केवल एक व्यक्ति का जाना नहीं था, बल्कि उस विश्वास और सुरक्षा के कवच का हटना था जो हर मुश्किल में ढाल बनकर खड़ा रहता था। इन ३६५ दिनों में कोई ऐसा दिन नहीं बीता जब आपकी कमी महसूस न हुई हो। आपकी मुस्कुराहट, वह निस्वार्थ सेवा भाव और हर छोटी बात में सबका ख्याल रखना—आज भी यादों की गहराई में जीवित है।

प्रकृति और जीवन का सत्य साहित्य और दर्शन हमें सिखाते हैं कि मानव जीवन और प्रकृति का गहरा अंतर्संबंध है। जैसे ऋतुएं बदलती हैं, वैसे ही जीवन के चक्र में वियोग भी एक अनिवार्य सत्य है। किंतु यह भी सत्य है कि प्रेम कभी नहीं मरता। वह श्रद्धा बनकर, दुआओं बनकर और बच्चों के संस्कारों में सदैव जीवित रहता है। आज इस अवसर पर हृदय केवल कृतज्ञता से भरा है कि ईश्वर ने हमें आपका साथ दिया। आपकी प्रथम पुण्यतिथि पर हम केवल विलाप नहीं कर रहे, बल्कि उन आदर्शों को याद कर रहे हैं जो आपने हमें सिखाए। विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखना और प्रेम की डोर से सबको बांधे रखना ही आपकी सबसे बड़ी विरासत है। आज हम संकल्प लेते हैं कि आपके बताए सिद्धांत और उन मूल्यों को जीवित रखेंगे जिन्हें आपने अपने जीवन में जिया और संवारा था।

पुण्यतिथि का यह दिन हमें याद दिलाता है कि देह नश्वर है, पर आत्मा और कर्म अमर हैं। आप हमारे विचारों में, हमारी प्रार्थनाओं में और हमारी हर सांस में बसी हैं। आज समस्त परिवार और आत्मीय जन आपको अश्रुपूर्ण नमन करते हुए आपकी शांति की प्रार्थना करते हैं

राज …………

# गुरु गोरखनाथ जी राजकीय कॉलेज हिसार का कुलगीत लोकार्पित किया

## हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. राजपाल ने लिखा यह कुलगीत

भास्कर न्यूज | हिसार

गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय का कुलगीत हुआ लोकार्पित।

गुरु गोरखनाथ जी राजकीय कॉलेज हिसार के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया है। हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. राजपाल द्वारा रचित कॉलेज का कुलगीत डॉ. भीमराव अंबेडकर की 135वीं जयंती पर आयोजित कार्यशाला में विधिवत रूप से लोकार्पित किया गया। यह कुलगीत संस्थान की 1950 से 2025 तक की 75 वर्षों की गौरवपूर्ण यात्रा को समर्पित है।

डॉ. राजपाल ने बताया कि कॉलेज केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि संस्कार, शिष्टाचार और सामाजिक समरसता का प्रतीक है। गीत की पंक्तियों में संस्था के प्रति गर्व और कृतज्ञता की भावना स्पष्ट झलकती है। "हे महाविद्यालय पूजनीय, हम तुमको नमन करें" जैसी पंक्तियां विद्यार्थियों को संस्थान के आदर्शों से जोड़ने का संदेश देती हैं। वहीं कला, विज्ञान, वाणिज्य, खेल और संगीत के समन्वय को भी इसमें दर्शाया गया है। कार्यक्रम में कुलगीत का ऑडियो संगीत विभाग के सहयोग से तैयार किया गया, जिसका लोकार्पण मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार गर्ग (पूर्व मंडलायुक्त) और मुख्य वक्ता प्रो. प्रवीन कुमार अंशुमन (दिल्ली विश्वविद्यालय) ने संयुक्त रूप से किया। प्राचार्य डॉ. विवेक कुमार सैनी ने कहा कि यह कुलगीत अब प्रत्येक प्रार्थना सभा, राष्ट्रीय पर्व और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अभिन्न हिस्सा होगा। एनएसएस स्वयंसेवकों और विद्यार्थियों ने कुलगीत का सामूहिक गायन किया। विद्यार्थियों ने इसे महाविद्यालय की नई पहचान और गर्व का प्रतीक बताया। डॉ. राजपाल ने इसे पूरी संस्था की सामूहिक भावना बताते हुए कहा कि यह गीत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।

# राजकीय महाविद्यालय में एम.ए. हिन्दी अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के सम्मान में विदाई समारोह का आयोजन

पांच बजे न्यूज

**हिसार।** गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय, हिसार के हिन्दी विभाग द्वारा एम.ए. अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के सम्मान में विदाई समारोह का आयोजन सायंकालीन सत्र में किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और रंगारंग प्रस्तुतियों से माहौल को खुशनुमा बना दिया।समारोह में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विवेक कुमार सैनी ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की और विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर हिन्दी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने प्राचार्य को अवगत कराया कि विभाग के दो विद्यार्थी अनु गोदारा एवं अंजू गंगवा (सत्र 2023-24) का हाल ही में हरियाणा में निकली भर्ती में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर चयन हुआ है, वहीं एक अन्य छात्रा वीना का चयन बैंक क्लर्क के पद पर हुआ है। हिन्दी विभाग की ओर से इन सभी विद्यार्थियों को प्राचार्य के करकमलों से सम्मानित किया गया।

हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. कमलेश ने विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम के दौरान काजल को 卐मिस फेयरवेल卐 तथा सचिन को 卐मिस्टर फेयरवेल卐 चुना गया। इन्हें डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा फेयरवेल पट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन कोमल एवं मनीष ने किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों में नरेश, कृष्ण, मुस्कान, गीता, संदीप, लीजा, पुष्पा, स्वीटल, रितु, आंचल, दीपक, अनिल, सोमवीर, अजय, मुल्तान, किरण, अंतिम, मंजू, अनुष्का आदि ने भाग लिया। वहीं प्राध्यापकगण में डॉ. कविता, डॉ. सुनीता, डॉ. सुमन सहित अन्य उपस्थित रहे।

## ENGISH PHRASES WORDS

1. Face the music:
He had to face the music after breaking the school rules.

2. Add fuel to the fire:
His rude comments added fuel to the fire.

3. Cry over spilled milk:
There is no use crying over spilled milk now.

4. Jump to conclusions:
Don’t jump to conclusions without knowing the full story.

5. A tough nut to crack:
This maths problem is a tough nut to crack.

6. Beat around the bush:
Stop beating around the bush and tell the truth.

7. Through thick and thin:
True friends stay together through thick and thin.

8. No pain, no gain:
He works hard every day because he believes in no pain, no gain.

9. Rain cats and dogs:
It was raining cats and dogs last night.

10. Practice makes perfect:
She practices dancing every day because practice makes perfect.

# महाविद्यालय के स्नातकोत्तर हिंदी *(उत्तरार्द्ध)* के छात्रों द्वारा प्रसिद्ध नाटक 'घासीराम कोतवाल' का प्रभावशाली मंचन किया गया।

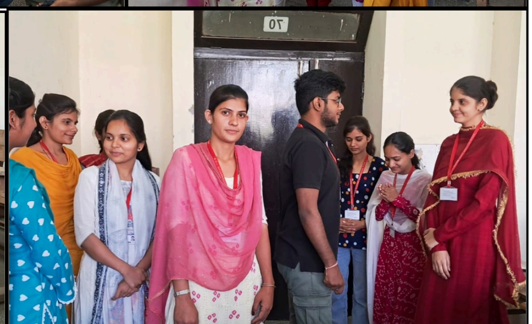

**घासीराम कोतवाल नाटक**

**पात्र :-**

कथावाचक – किरण रानोलिया
सूत्रधार – सनेवा
पहला ब्राह्मण - राहुल
दूसरा ब्राह्मण - पूनम
तीसरा ब्राह्मण - ज्योति
चौथा ब्राह्मण - पूजा
पांचवा ब्राह्मण - प्रीति
छठा ब्राह्मण - पूजा (1)
नानासाहेब → विजय
गुलाबी → प्रियंका
लावणी → अनु
ललिता गौरी → प्रीति
घासीराम कोतवाल → मंजू रानी

## पुस्तकें उदार दान देने के लिए सहायक प्राध्यापक को सराहना पत्र प्रदान किया

हिसार | गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विवेक कुमार सैनी ने सहायक प्राध्यापक (हिंदी) डॉ. राजपाल को उनके द्वारा रचित 10 पुस्तकों के महाविद्यालय पुस्तकालय को उदार दान हेतु सराहना पत्र प्रदान किया। डॉ. राजपाल महाविद्यालय के हिंदी विभाग में सहायक प्राध्यापक हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उनकी लिखी गई अनुवादित पुस्तक हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध इतिहास की भूमिका, सामान्य हिंदी जैसी प्रसिद्ध पुस्तकें और अन्य साहित्यिक कृतियां अब महाविद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध होंगी, जिससे विद्यार्थियों को परीक्षाओं की तैयारी में विशेष सहायता मिलेगी। पुस्तकालय समन्वयक डॉ. अनिल कुमार, रितु बिष्ट, डॉ. सतीश वर्मा व डॉ. सुरेश कुमार मौजूद रहे।

## अक्षरम्-2026 में पुस्तक समकालीन यात्रा-वृत्तांतों में स्त्री संवेदना का विमोचन

- पुस्तक विमोचन समारोह की अध्यक्षता विवि के कुलपति ने की
- रितेश रजवाड़ा, नवीन चौधरी और अंतिल ने किया पुस्तक का विमोचन

जागरण संवाददाता, हिसार : गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में संस्कृति महोत्सव अक्षरम्-2026 में डा. राजपाल और डा. गीतू धवन की सह-संपादित, सह-लिखित पुस्तक समकालीन यात्रा-वृत्तांतों में स्त्री संवेदना का औपचारिक विमोचन किया गया। पुस्तक विमोचन समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की।

उन्होंने कहा कि यात्रा साहित्य केवल भौगोलिक वर्णन मात्र नहीं है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक चेतना का दस्तावेज है। इस पुस्तक में समकालीन लेखिकाओं कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, सूर्यबाला, नासिरा शर्मा, मधु कांकरिया और गगन गिल के यात्रा-वृत्तांतों के माध्यम से स्त्री संवेदना का जो गहन विश्लेषण किया गया है, वह हिंदी साहित्य में एक मील का पत्थर साबित होगा। पुस्तक का विमोचन वरिष्ठ साहित्यकारों रितेश रजवाड़ा, नवीन चौधरी और अंतिल ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर तीनों विद्वानों ने पुस्तक की भाषा, शिल्प, कथ्य व स्त्री-दृष्टि की विशिष्टता पर चर्चा की।

अक्षरम्-2026 में डा. राजपाल एवं डा. गीतू धवन की पुस्तक 'समकालीन यात्रा-वृत्तांतों में स्त्री संवेदना का विमोचन करते हुए • पीआरओ

उन्होंने कहा कि यह पुस्तक पारंपरिक यात्रा-वृत्तांतों की सीमाओं को तोड़ते हुए स्त्री अनुभवों, संघर्षों, आत्म-अवलोकन की प्रक्रिया को प्रामाणिक रूप से अभिव्यक्त करती है। पुस्तक की सह-लेखिका डा. गीतू धवन ने पुस्तक की रूपरेखा के बारे में बताया कि किस प्रकार समकालीन लेखिकाओं ने अपने यात्रा-वृत्तांतों में प्रकृति, भूगोल, संस्कृति व मानवीय संवेदनाओं को एक नए स्त्री-सौंदर्यबोध से जोड़ा है। सह-लेखक डा. राजपाल ने इस शोधपरक पुस्तक को युवा शोधार्थियों और साहित्य प्रेमियों के लिए एक अनिवार्य संदर्भ बताया।

# डॉ. भीमराव अंबेडकर का भाषा-चिंतन: विविधता, एकता और प्रशासनिक सुगमता के बीच संतुलन

**सारांश**

डॉ. भीमराव अंबेडकर के भाषा संबंधी विचार उनकी बहुआयामी चिंतनधारा का अभिन्न अंग थे, जो भाषाई विविधता के सम्मान, राष्ट्रीय एकता की अनिवार्यता और प्रशासनिक सुगमता के व्यावहारिक दृष्टिकोण पर आधारित थे। एक ओर उन्होंने 'एक राज्य, एक भाषा' नीति के तहत भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का समर्थन किया, तो दूसरी ओर उन्होंने राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए हिंदी एवं संस्कृत को साझा भाषा के रूप में अपनाने पर बल दिया। यह शोध-पत्र उनकी इन्हीं विचारधाराओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

**प्रस्तावना**

1950 के दशक में भारत सरकार के समक्ष सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक थी भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग। 1955 में डॉ. अंबेडकर ने अपनी पुस्तक "Thoughts on Linguistic States" (प्रथम प्रकाशन 1955) लिखी, जो इस मुद्दे पर उनके विचारों का सबसे प्रामाणिक दस्तावेज है। इसके अतिरिक्त, संविधान सभा (1946-1950) में भाषा के मुद्दे पर गहन बहसों के दौरान मसौदा समिति के अध्यक्ष के रूप में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही।

**'एक राज्य, एक भाषा' का सिद्धांत**

अंबेडकर ने स्पष्ट रूप से कहा कि 'एक राज्य, एक भाषा' एक सार्वभौमिक विशेषता है, जो जर्मनी, फ्रांस, इटली, इंग्लैंड और अमेरिका के संविधानों में देखी जा सकती है। उनका मानना था कि एक ही भाषा लोगों को एकजुट कर सकती है, जबकि दो भाषाएँ लोगों को विभाजित करने वाली होती हैं। उन्होंने तर्क दिया कि यदि किसी एक भाषा को प्रशासन की भाषा नहीं बनाया गया, तो प्रत्येक राज्य अपनी क्षेत्रीय भाषा को प्रशासन की भाषा बना लेगा, जिससे राष्ट्रीय एकता को गंभीर खतरा पैदा हो जाएगा।

**हिंदी पर चेतावनी और अंग्रेजी का समर्थन**

संस्कृत के समर्थन के साथ ही अंबेडकर ने हिंदी को केवल हिंदी भाषियों की भाषा बताते हुए चेतावनी दी कि इसे एकतरफा थोपने से देश की एकता को गहरा आघात पहुँच सकता है। अकादमिक शोधकर्ता वसुधा भारद्वाज के अनुसार, अंबेडकर ने भाषाई राज्यों की मांग को मुस्लिम लीग के पाकिस्तान की मांग के समकक्ष खतरे के रूप में देखा। उनका समाधान दोहरा था: पहला, 'एक राज्य, एक भाषा' का सख्ती से पालन; दूसरा, प्रशासन की भाषा हिंदी के सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य होने तक अंग्रेजी ही बनी रहे——जो मूलतः मुंशी-अय्यंगार फॉर्मूले के उनके समर्थन का ही विस्तार था। अंग्रेजी के प्रति उनका रुख व्यावहारिक था: उनकी दृष्टि में अंग्रेजी न केवल एक आधुनिक एवं प्रशासनिक भाषा थी, बल्कि एक ऐसा सेतु भी थी जो विभिन्न भाषाई समुदायों को जोड़ सकता था।

**निष्कर्ष**

निष्कर्षतः, डॉ. अंबेडकर का भाषा-चिंतन व्यावहारिकता और दूरदर्शिता का अद्वितीय उदाहरण है। उन्होंने भाषाई विविधता का सम्मान, प्रशासनिक सुगमता और राष्ट्रीय अखंडता – इन तीनों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया। उनकी सबसे बड़ी चेतावनी यह थी: "यदि मेरा सुझाव स्वीकार नहीं किया गया, तो भारत भारत नहीं रहेगा। यह प्रतिद्वंद्वी राष्ट्रीयताओं के संग्रह में बदल जाएगा, जो एक-दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा और संघर्ष में लगे रहेंगे"। आज, जब भारत बहुभाषी लोकतंत्र के रूप में नई चुनौतियों का सामना कर रहा है, अंबेडकर के ये विचार पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गए हैं।

**प्रियंका**

# साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. भारोपीय परिवार की भाषाओं को केंटुम और शत्म वर्ग में विभाजन किस विद्वान ने किया था? - प्रो० अस्कोली (१८७० ई० में)
2. भोजपुरी मैथिली और मगही को एक साथ रखकर बिहारी नाम किस विद्वान ने दिया था? - ग्रियर्सन
3. भारोपीय परिवार की भाषाएँ आकृति मूलक दृष्टि से हैं? - श्लिष्ट योगात्मक
4. हिंदी आकृतिमूलक दृष्टि से है? - श्लिष्ट योगात्मक (वियोगात्मक)
5. द्रविड़ भाषाएँ आकृतिमूलक दृष्टि से हैं? - अश्लिष्ट योगात्मक
6. चीनी, तिब्बती, वर्मी, स्यामी, अनामी, सूडानी-भाषाएँ आकृतिमूलक दृष्टि से हैं? - अयोगात्मक
7. आकृति मूलक दृष्टि से तुर्की भाषा है? अश्लिष्ट योगात्मक
8. विश्व में लगभग कितनी भाषाएँ बोली जाती हैं? लगभग ३००० (२७९६)
9. भाषाओं के आकृतिमूलक वर्गीकरण का आधार है? - रचनातत्व (पदरचना और
10. वाक्य रचना) भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण का आधार है? - रचनातत्व और अर्थतत्व
11. अयोगात्मक वर्ग की प्रतिनिधि भाषा है? - चीनी
12. प्रमुख भाषा परिवार हैं? -१८
13. बोलने वालों की संख्या तथा भौगोलिक व्यापकता की दृष्टि से सबसे बड़ा भाषा परिवार है? - भारोपीय परिवार
14. बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा भाषा परिवार है? - चीनी परिवार
15. क्षेत्र-विस्तार की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा परिवार है? -यूराल-अल्ताई परिवार
16. भारोपीय भाषा परिवार को 'भारत-हिती' नाम किसने दिया ? - प्रो० स्टुटवेंट ने (१८९३ में)
17. अमेरिकी परिवार में लगभग कितनी भाषाएँ मानी जाती हैं? - लगभग १०००
18. भाषाओं के वर्गीकरण के प्रमुख भेद हैं? दो (१) आकृतिमूलक वर्गीकरण (२) पारिवारिक वर्गीकरण
19. भाषाओं के आकृतिमूलक वर्गीकरण के प्रमुख भेद हैं? दो (१) अयोगात्मक (२) योगात्मक अश्लिष्ट, श्लिष्ट, प्रश्लिष्ट
20. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का काल सामान्यतया माना जाता है? -१५०० ई० ए०

**किरण रानोलिया**

## शब्द-युग्म
**(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)**

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

| शब्द | अर्थ |
| --- | --- |
| कृपण | कंजूस |
| कृपाण | तलवार |
| केत | घर |
| केतू | एक ग्रह का नाम |
| कटौती | कुछ अंश कम |
| कठौती | काठ का कटोरा |
| करण | साधन |
| कर्ण | कान |
| कुमि | कीड़ा |

## विलोम शब्द (Antonyms)

भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन द्वंद्वात्मक, अन्तर्विरोधात्मक है, इसलिए प्रत्येक भाषा में दो विपरीत अर्थों, मंतव्यों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का अस्तित्व रहता है। विपरीत भाव को व्यक्त करने के लिए ही विलोम (उल्टा) शब्दों की जानकारी आवश्यक है। हिंदी में ऐसे विलोम शब्द या तो मूल शब्द के रूप में पहले से ही विद्यमान हैं; जैसे दिन-रात, सुख-दु:ख, छोटा-बड़ा आदि या फिर उपसर्ग लगाकर; जैसे-ज्ञानी-अज्ञानी, अर्थ-अनर्थ या उपसर्ग बदलकर; जैसे-सक्षम-अक्षम, अनुकूल-प्रतिकूल बनाए जाते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्दों की सूची इस प्रकार है-

| शब्द | अर्थ |
| --- | --- |
| अधिकार | अनधिकार |
| अधिकृत | अनधिकृत |
| असीम | ससीम |
| अर्पण | ग्रहण |
| अल्पायु | दीर्घायु |
| अवर | प्रवर |
| अपराधी | निरपराध |
| अतिथि | आतिथेय |
| अनहोनी | होनी |
| अभियुक्त | अभियोगी |
| अधुनातन | पुरातन |
| असूया | अनसूया |
| अस्त्रीकरण | निरस्त्रीकरण |
| अल्पसंख्क | बहुसंख्यक |

# प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Proclaim = घोषणा

Protocol = नयाचार

Procure = वसूल करना

Proficiency = प्रवीणता

Prohibitory = निषेधात्मक

Project = परियोजना

Promulgate = जारी करना/प्रख्यापित करना

Proper Channel = उचित मार्ग

Proportionately = अनुपाततः

Prosecute = अभियोग चलाना

Provide = देना/व्यवस्था करना

Provision = उपबंध/व्यवस्था

Provisional = अस्थायी

Proviso = शर्त /परंतुक (RAS-97)

Proxy = परोक्षी/प्रतिपत्र

Public account = लोक लेखा

Public body = सार्वजनिक निकाय

Public Fund = लोक निधि

Public Relation = जन संपर्क

Public Trust = लोक न्यास

Pursuance = अनुसरण/अनुरोध

Qualification = अर्हता, योग्यता

Qualifying Examination = परीक्षा अर्हक

Quasipermanency = स्थायिवत्ता

Quorum = कोरम/गणपूर्ति

Quo warranto = अधिकार पृच्छा

# ग़ज़ल

बुके से बेहतर बुक" – जागरण परिवार की अनूठी पहल *
फूलों के बुके की जगह अब बुक बने पहचान,
जागरण परिवार ने दी नई उड़ान को जान।
बुके मुरझा जाए, पर बुक रहेगी अमर,
ज्ञान की इस मुहिम ने दिखा दी सच्ची डगर।
राकेश क्रांति जी का ये संकल्प न्यारा,
हर हाथ में किताब, हर दिल हो उजियारा।
राहुल मितल जी की सोच, सबको दिशा दिखाए,
टीम की मेहनत से हर सपना साकार हो जाए।
बुके से बेहतर बुक – ये नारा बने मिसाल,
जागरण परिवार की ये पहल हो कमाल।
ज्ञान का उपहार जब हो, फिर क्या कमी,
पूरी टीम के जज़्बे को कोटि-कोटि नमी।
"राज" ये कहे हर घर में ये रीत अपनाएँ,
किताबों के संग हर त्योहार मनाएँ।
सम्मान हो ऐसी सोच का, नया इतिहास गढ़े,
बुक की रौशनी से हर अंधकार टल मिटे।

~ **राजपाल**

IV दैनिक जागरण हिसार, 24 अप्रैल, 2026 — जागरण सिटी हिसार — www.jagran.com

## बुके से बेहतर बुक अभियान दे रहा संदेश, किताबें जीवंत विरासत का अनमोल उपहार

**किताब भावनाओं का अमिट स्पर्श**
डा. दवीना अमर ठकराल ने किताब को सबसे अनमोल उपहार बताया। उन्होंने एक भावनात्मक उदाहरण साझा करते हुए कहा कि जब रचनाओं को पुस्तक रूप में उपहार दिया गया, तो वह केवल वस्तु नहीं, बल्कि जीवनभर की स्मृति बन गई।

**पुस्तकालयों की भूमिका और चुनौतियां: हरीश चंद्र**
लाइब्रेरियन हरीश चंद ने बताया कि कई स्थानों पर पुस्तकालयों को अपेक्षित प्रोत्साहन नहीं मिल रहा, जिसे सुधारने की आवश्यकता है।

**बचपन से पढ़ने की आदत डालें**
सविता देवी ने कहा कि बच्चे आज भी पढ़ना चाहते हैं, आवश्यकता है उन्हें उनकी रुचि के अनुसार पुस्तकें उपलब्ध कराने की। छोटे स्तर से शुरुआत कर उन्हें धीरे-धीरे साहित्य से जोड़ना होगा। दैनिक जागरण का बुके से बेहतर बुक एक बेहतर पहल है।

किताब जीवंत विरासत का उपहार

**किताब में अनगिनत भावनाएं** — **डिजिटल युग में भी किताबों की प्रासंगिकता** — **जन-जन तक पहुंचे साहित्य: मनचंदा** — **पढ़ना ही स्वयं को जानना: वीरेंद्र कुमार** — **साहित्य से जुड़ाव बनाता है संस्कारवान** — **अलमारियों से बाहर निकालें किताबें: जयभगवान** — **किताबों को पहुंचाना होगा हर वर्ग के पाठकों तक** — **पुस्तक समीक्षा से बढ़ेगी रुचि** — **कविताओं की भी उठी गूंज, किताबों का बताया महत्व**

# ग़ज़ल (ड्रामा)

यह दुनिया अब मंच बनी है,
हर कोई अपना रोल निभा रहा है,
चेहरे पर सच्चाई कम दिखती,
अंदर कुछ और ही छुपा रहा है।
हर कोई कर रहा है ड्रामा यहां,
पीने वाले शराब, नशे में यहां,
दूसरे को ही आंकते रहते,
खुद से ही सब बेखबर यहां।
चोर हैं कई दिलों के भीतर,
चेहरों पर मासूमियत का जाल,
हरेक नेता जो नारा देता,
बोलों में मीठा, इरादे बेहाल।
बैठे जो ऊंचे सिंहासन पर,
फैसलों का खेल रचाते हैं,
काला धन भरकर घर अपने,
ईमान का पाठ पढ़ाते हैं।
कानून के रखवाले ही जब,
भक्षक का रूप दिखाते हैं,
वर्दी का रौब गरीबों पर,
दिन-रात यूं ही चलाते हैं।
धर्म के नाम पे, जात के नाम पे,
लोगों को आपस में लड़ाते हैं,
इंसानियत कहीं खो सी गई,
बस झूठे नाटक सजाते हैं।
इस दुनिया के इस तमाशे में,
सच अब भी कहीं सिसकता है,
झूठ की भीड़ में दबकर भी,
दिल सच कहने को तरसता है।
सच की राह कब रोशन होगी,
कब मिटेगा ये झूठ का साज ?
बस एक सवाल हर दिल में है,
कब खत्म होगा ये छल का राज,

(डॉ. आर. पी. राज)

# पुस्तक समीक्षा

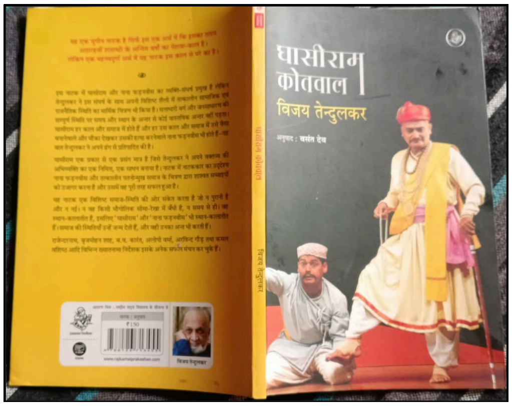


लेखक: विजय तेंदुलकर
पुस्तकः “घासीराम कोतवाल"
मूल्य: ₹150.00
पृष्ठ: 104
विधा- नाटक (अनुवाद: वसंत देव)
वाणी प्रकाशन

विजय तेंदुलकर का नाटक 'घासीराम कोतवाल' मूलतः सत्ता के अहंकार, सामाजिक ऊँच-नीच और प्रतिशोध की विकराल मानसिकता का यथार्थ चित्रण है। इस नाटक का केंद्र घासीराम नामक एक गरीब ब्राह्मण है जो कन्नौज से पुणे आता है। पुणे के पेशवा दरबार में ब्राह्मणों का वर्चस्व है, लेकिन घासीराम को वे हेय दृष्टि से देखते हैं, उसका अपमान करते हैं। इस अपमान की आग में घासीराम का मन कुंडलित हो उठता है। वह प्रतिशोध की ज्वाला में सत्ता हथियाने का षड्यंत्र रचता है। वह पेशवा के सर्वशक्तिमान मंत्री नाना फड़नवीस की कमजोरी – रंगभोगी स्वभाव – को भाँप लेता है। अपनी सुंदर एवं गुणवती बेटी गौरी को नाना की सेवा में अर्पित करके घासीराम पुणे का कोतवाल बन जाता है।
घासीराम का पात्र अत्यंत जटिल है। वह एक ओर दब्बू, अपमानित, करुण पिता है, तो दूसरी ओर सत्ता मिलते ही निर्दयी, क्रूर और अहंकारी तानाशाह में बदल जाता है। वह शहर में अत्याचार की जंजीरें डाल देता है। गरीबों, महिलाओं, यहाँ तक कि पेशवा दरबार के ब्राह्मणों को भी वह प्रताड़ित करता है। उसका कोतवाली-काल पुणे के लिए आतंक का पर्याय बन जाता है। दूसरी ओर गौरी का पात्र मूक सहिष्णुता और करुण बलिदान का प्रतीक है। वह पिता की महत्वाकांक्षा के लिए नाना की रखैल बन जाती है, फिर भी वह अपने पिता से प्रेम करती है। नाना फड़नवीस एक धूर्त, विलासी और चालाक सत्ताधीश हैं। वे पूरे नाटक में पर्दे के पीछे से सब कुछ नियंत्रित करते हैं। अंत में जब गौरी मर जाती है, तब वे घासीराम को ही दोषी ठहराकर उसे मरवा डालते हैं।

नाटक की सबसे बड़ी सफलता इसकी शैली में है। तेंदुलकर ने मराठी लोकनाट्य परंपरा ‘तमाशा’ का प्रयोग किया है। तमाशा के गीत, संगीत और व्यंग्य नाटक के कथ्य को और तीखा बनाते हैं। एक ही धुन पर शादी के गीत और फिर मौत के गीत गाए जाने का विरोधाभास नाटक को विचलित करने वाला बनाता है। पात्रों का कोई एकांत आंतरिक संघर्ष नहीं है, बल्कि वे सब सामूहिक रूप से सामाजिक पाखंड के शिकार हैं। समीक्षा की दृष्टि से यह नाटक शासक और प्रजा, पुरुष और स्त्री, ऊँच और नीच के बीच के सारे भेदों को ध्वस्त कर देता है। यह दिखाता है कि सत्ता के लिए कोई भी बलिदान – चाहे वह बेटी का शरीर हो या किसी की स्वाभिमान – अंततः व्यर्थ हो जाता है, क्योंकि सत्ता की व्यवस्था किसी एक व्यक्ति से बड़ी होती है। घासीराम खुद को चालाक समझता है, लेकंत अंत में वह नाना का खिलौना मात्र रह जाता है। यह नाटक हर बार पढ़ने या देखने पर सवाल खड़े करता है – क्या हम सब घासीराम हैं? क्या हम सब नाना हैं? यही इसकी स्थायी प्रासंगिकता है।

**समीक्षक**
डॉ राजपाल
हिंदी-विभाग